# ईमानदारी से परमेश्वर के वचन की शिक्षा देना (1 तीमुथियुस 1)

*''जैसे मैंने मकिदुनिया को जाते समय तुझे समझाया था, कि इफिसुस में रहकर कितनों को आज्ञा दे कि और प्रकार की शिक्षा न दें ... '' (1 तीमुथियुस 1:3, 4)।*

पौलुस ने तीमुथियुस को परमेश्वर के वचन, इसके स्रोत, इसके पर्याप्त होने, और उद्धार करने की इसकी सामर्थ के बारे में लिखा। वह चाहता था कि तीमुथियुस खरी शिक्षा के महत्व को समझ ले (1:3-7) और वचन के किसी भी प्रकार के गलत इस्तेमाल को पहचानकर इसे चुनौती देने के योग्य बन जाए (1:7-11)। उसने पापियों को छुड़ाने के लिए परमेश्वर के प्रबन्ध के विषय में लिखा (1:12-17) और ज़ोर दिया कि परमेश्वर हमसे निर्णय लेने की मांग करता है (1:18-20)।

## पाठ 1: खरी शिक्षा का महत्व (1:3-7)

### परमेश्वर के वचन का दुरुपयोग हुआ (आयतें 3, 4)

उनके आस पास के लोगों द्वारा बहुमूल्य सुसमाचार का दुरुपयोग करने के कारण, आश्चर्य की बात नहीं कि पौलुस ने तीमुथियुस को यह सुनिश्चित करने की आज्ञा दी कि वह दूसरे कई लोगों की तरह परमेश्वर के वचन को न छोड़े (1:18-20)। मसीह का प्रेरित होने के नाते पौलुस को तीमुथियुस को ऐसा आदेश देने का अधिकार था।[1] उस सुसमाचार को सिखाने के लिए जिससे हमें हमारे पिछले पापों से छुड़ाया जाना था (रोमियों 3:23; इफिसियों 2:1-6) पौलुस को ''हमारे उद्धारकर्ज़ा परमेश्वर, और हमारी आशा स्थान मसीह यीशु की आज्ञा से'' (1:1) चुना गया था। उसकी शिक्षा से हमारे लिए उज्ज्वल भविष्य का रास्ता खुलना था (कुलुस्सियों 1:24-28)।

आयत 2 के अनुसार, विश्वास में सच्चा पुत्र होने के कारण तीमुथियुस को तीन ईश्वरीय फायदे दिए गए थे: (1) उस सेवा के महत्व को जानने में बलवंत होने के लिए उसे

''अनुग्रह'' दिया गया था (2 तीमुथियुस 2:1), ताकि वह अपनी सामर्थ से बढ़कर सेवा दे सके।[2] (2) उसे अपने काम में लगे होने पर कई ज़िम्मेदारियां निभाते हुए अपनी गलतियों का सामना करने के लिए ''दया''[3] का दान दिया गया था (इब्रानियों 4:16; इफिसियों 2:4-9)। (3) उसे ''शांति'' अर्थात मन की स्थिरता दी गई थी जिससे व्यक्ति बाहर की किसी भी परिस्थिति का सामना करते हुए विश्वास में स्थिर रह सकता है। एक कैदी के रूप में, पौलुस ने दिखाया कि एक प्रचारक चिंता पर काबू कैसे पा सकता है। (देखें फिलिप्पियों 4:4-7.)[4] इन तीन लाभों पर विचार करें जो पौलुस ने तीमुथियुस को बताए थे। सचमुच, परमेश्वर के वचन में जो उसने इस सुसमाचार प्रचारक को सौंपा था मसीही लोगों के आगे आने वाली घटनाओं और अनुभवों में लागू करने पर जीवन को बदल देने की सामर्थ है।

जब पवित्र शास्त्र का दुरुपयोग होता है, तो सुसमाचार के चौकस प्रचारक को चाहिए कि वह इसका दुरुपयोग करने वालों को आज्ञा[5] दे कि ''और प्रकार [या अलग तरह] की शिक्षा न दें'' (1:3)।

''और प्रकार की शिक्षा'' कोई कथा - कहानी[6] हो सकती है जिसे सुनने वालों की इच्छा के कारण सच्चाई के रूप में मान लिया गया हो (2 तीमुथियुस 4:3, 4)। ऐसा ढंग पौलुस और तीमुथियुस के समय के यहूदियों में एक समस्या थी, परन्तु इसका सम्बन्ध किसी भी ऐसी बात से जोड़ा जा सकता है जिसकी मांग उन लोगों द्वारा की जाती है जो ''सत्य से भटक जाते हैं'' (तीतुस 1:14)। इसका सम्बन्ध ''अनन्त वंशावलियों'' या ''हम जो पहले से करते आए हैं'' से जोड़ा जा सकता है। पौलुस के समय अन्यजातियों के विरुद्ध पूर्वाग्रह का कारण यहूदियों के धार्मिक और राष्ट्रीय गौरव को प्रोत्साहित करने वाला यहूदी इतिहास था (देखें मत्ती 3:1, 7-10; प्रेरितों 15:1-31; मरकुस 7:8-13)। इस समस्या के कारण, ''व्यवस्था के विषय में झगड़े'' (तीतुस 3:9-11) होने शुरू हो गए थे।

झगड़ों से ऐसे विवाद हो सकते हैं जो ''परमेश्वर के उस प्रबन्ध के अनुसार नहीं, जो विश्वास से सम्बन्ध रखता है'' (आयत 4; देखें 6:4, 20; 2 तीमुथियुस 2:16, 23; 4:4; गलातियों 2:11-3:9)। विवाद[7] से गहरी छानबीन और झगड़ा तो हो सकता है, परन्तु कोई *भलाई नहीं* हो सकती है! इस प्रकार के कार्यों के चौंकाने वाले दो उदाहरण मरकुस 14:53-59 के साथ प्रेरितों 6:8-14 और मरकुस 15:22-24 के साथ प्रेरितों 7:57-60 की तुलना करने पर मिल सकते हैं। एक विवाद का अंत मसीह को क्रूस देना हुआ, और दूसरे झगड़े का परिणाम स्तिफनुस को पथराव करके मारने के रूप में हुआ! इस आचरण के कारण बहुतों की आत्मिक मौत हुई है (मत्ती 7:20)। परमेश्वर हर सुसमाचार प्रचारक को विनाशक झगड़ों पर विजय पाने में सहायता के लिए सद्बुद्धि दे।

## परमेश्वर के वचन का इस्तेमाल (आयत 5)

परमेश्वर की शिक्षा से हमारी सोच को मनुष्य की मूर्खता से नहीं बल्कि परमेश्वर के प्रबन्ध या ''काल''[8] (ASV) में लाए जाने से लोग सुन्दर और सुसमाचार का प्रचार करने वाले बनते हैं। यह अच्छा विचार पौलुस द्वारा दिए गए पंचगुणी चरित्र के विश्लेषण से वास्तविकता में निखरता है:

(1) उसकी सोच ''विश्वास'' पर आधारित होती है।[9] विश्वास ऐसी चीज़ है जिसमें और जिसके द्वारा व्यज़्ति सेवा करता है (देखें 2 कुरिन्थियों 5:7; प्रेरितों 6:7)।

(2) उसकी सोच प्रेम से प्रेरित और प्रभावित होती है (1 यूहन्ना 4:19; 2 कुरिन्थियों 5:14, 15; यूहन्ना 13:34, 35; 1पतरस 1:22)।

(3) उसकी सोच शुद्ध मन से निकलती है (देखें तीतुस 1:15, 16; 1 यूहन्ना 3:3)। इससे प्रचारकों के स्वार्थीपन, शज़्ति पाने की इच्छा, और ईर्ष्यालु व्यवहार का हमेशा के लिए अन्त हो जाएगा।

(4) उसकी सोच शुद्ध विवेक से निकलती है (प्रेरितों 23:1)। पौलुस इस बात का प्रमाण है कि परमेश्वर शुद्ध विवेक से उसके पास आने वाले लोगों के द्वारा कितने बड़े – बड़े काम कर सकता है।

(5) उसकी सोच निष्कपट विश्वास के रूप में जानी जाती है (2 तीमुथियुस 1:5; याकूब 2:17)। बेशक विश्वास वह स्रोत या आधार है, जिस पर व्यवहार बनता है, परन्तु विश्वास वह व्यज़्तिगत आत्मविश्वास भी है जो विश्वास से ही पैदा होता है। इसमें किसी झूठी शिक्षा को बढ़ावा देने का ढोंग या पाखंड करने की बात नहीं है जिससे कोई धोखे में आ जाए और दूसरे लोग निराश हो जाएं। विश्वास मसीह की वाचा को (कथा कहानियां नहीं) सुनने से आता है, तो इसमें बने रहना कितनी अच्छी बात है (रोमियों 10:15–17)!

## परमेश्वर के वचन का दुरुपयोग (आयतें 6, 7)

कई बार वे गुमराह शिक्षक जिन्हें लोग पसन्द नहीं करते हैं, परमेश्वर के वचन को गलत जगह लागू करते हैं। ये लोग ''भटक गए हैं।''[10] ऐसा हो सकता है कि कोई पवित्र शास्त्र का अध्ययन करता रहने के बावजूद उद्धारकर्ज़ा को न पा सके (देखें यूहन्ना 5:39, 40)। जो लोग मसीह में हैं उन्हें अभी भी अपने आप को परखने की आवश्यकता है कि ज़्या वे ''विश्वास में'' हैं या नहीं (2 कुरिन्थियों 13:5)। इस संदर्भ में, यह भटकना तभी होता है जब कोई शुद्ध मन से परमेश्वर के लोगों से प्रेम करना और शुद्ध विवेक त्याग देता है व अपने विश्वास को धोखा देने लगता है (1:5, 6)।

मसीही लोगों के ''बकवाद की ओर भटक''[11] जाने के कारण निश्चय ही संकट सामने होता है। तीतुस 1:10 में जिस प्रकार के व्यज़्ति का वर्णन है उसे रोबिंसन ने ''व्यर्थ बहस करने वाला''[12] और थेयर ने ''बेकार बातें करने वाला, जो व्यर्थ, निरर्थक बातें करता है'' कहा है।[13] ऐसे मामलों पर जिन्हें अनिश्चितता में बाइबल से जोड़ा गया है न जाने कितना समय गंवाया होगा और कितनी उलझन पैदा हुई होगी। निश्चय ही, जब विश्वासी भाई अपने ''सबसे अच्छे कदम'' शैतान के लिए उठाते हैं तो वह अवश्य खुश होता है!

व्यर्थ बहस करने वाले परमेश्वर के वचन को नहीं समझते बल्कि उन बातों के विषय में जिन्हें वे समझते भी नहीं ''दृढ़ता से बोलते हैं।''[14] अज़्सर ऐसे विश्वासी लोगों में मसीही बनने से लेकर इसी समय में किसी ''मुद्दे,'' ''शौक,'' ''नये खोजे गए सिद्धांत'' पर सबसे अधिक उज़ेजना होती है, जो दूसरों के विश्वास के खत्म होने का कारण बनते हैं। वे ऐसा विवाद उत्पन्न करते हैं जिससे प्रभु की देह में फूट पड़ जाए।

झूठी शिक्षा में दो खतरनाक और भयानक समस्याएं हैं। पहली, गुमराह व्यक्ति अविश्वसनीय गतिविधियों में सहयोग कर सकता है। पौलुस स्वयं इस सच्चाई का एक उदाहरण है। दूसरा, कुछ लोग दृढ़ता से किए जाने वाले उन झूठे दावों पर विश्वास कर *लेते हैं* (रोमियों 16:17, 18)। पतरस ने कहा कि ''प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की पहचान के द्वारा संसार की नाना प्रकार की अशुद्धता से बच निकलने के बाद, फिर उनमें फंसकर हार गए, तो उनकी पिछली दशा पहिली से भी बुरी हो गई है'' (2 पतरस 2:18-20; देखें प्रकाशितवाक्य 2:4, 5; 3:14-18)।

सदियों तक परेशान चेलों और उलझन में पड़ी मण्डलियों से, हमें पूछना चाहिए, ''विश्वासी लोग बाइबल से बाहर की शिक्षा की ओर क्यों मुड़ते हैं?'' विलियम बार्कले ने उपद्रवी लोगों में पांच विशेष बातें देखीं।[15]

पहली, झूठी शिक्षा देने वाले की ओर नयापन ढूंढ़ने वाले आकर्षित होते हैं वे नयेपन की इच्छा से खींचे जाते हैं (कुछ नई बात जैसे ''हमारे पुराने परम्परागत ढंग'')। हमें कुछ पुरानी परम्पराएं छोड़ देनी चाहिए, परन्तु यह आवश्यक है कि बदलाव की इस प्रक्रिया में सच्चाई का त्याग न किया जाए। (देखें प्रेरितों 17:21.) ''नहाने के पानी के साथ बच्चे को बाहर'' नहीं फैंक देना चाहिए।

दूसरा, वह पवित्र शास्त्र में नहीं बल्कि भावनाओं में अपना ध्यान लगाता है (देखें मरकुस 7:8-13; रोमियों 1:21-25)।

तीसरा, वह कार्य (या सेवा) के बजाय बहस में अपना समय गंवाता है (मत्ती 23:1-4; 1 तीमुथियुस 6:4, 5)।

चौथा, वह दीनता के बजाय घमण्ड से प्रभावित है (देखें 1 तीमुथियुस 1:7; 2 थिस्सलुनीकियों 2:2-4, 9-11; 1 पतरस 5:5-7 के साथ मत्ती 16:21-23)।

पांचवां, वह ज्ञानरहित हठधर्मिता का दोषी है (1 तीमुथियुस 1:7; रोमियों 10:1-3; 2 पतरस 2:17-19; 3 यूहन्ना 9, 10)।

आवश्यक नहीं कि कोई व्यक्ति ये पांच बातें करता ही हो, परन्तु बहुत से भाई इस कारण आहत हुए हैं क्योंकि किसी सदस्य ने शैतानी समर्थन से इनमें से एक या अधिक बातों में प्रहार किया है।

*अपने प्राणों की रक्षा के लिए, हम में से हर एक को ईमानदारी से अपने आप से पूछना चाहिए कि हमने इन पांच बातों में से किसी एक से हार तो नहीं गए।* आइए ''सब बातों को परखें'' (1 थिस्सलुनीकियों 5:21) और उस वचन में स्थिर रहें जिससे हमारा उद्धार होता है (1 कुरिन्थियों 15:2)।

## कौन सी व्यवस्था?
## (1 तीमुथियुस 1:7-11)

1:7,8 में ''व्यवस्था'' किसे कहा गया है? यहां पौलुस अवश्य ही मूसा की व्यवस्था की

बात कर रहा होगा। परन्तु उसकी चर्चा के अन्त में यह स्पष्ट है कि उसकी दिलचस्पी मसीह की व्यवस्था और व्यवस्था के रूप में व्यवस्था तोड़ने वालों के साथ इसके व्यवहार के प्रति थी (1:9, 10)। इस तरह पौलुस व्यवस्था की सही प्रासंगिकता की चर्चा कर रहा था।

व्यवस्था अच्छी थी, जो अपराध और भ्रष्टाचार को रोकने के लिए परमेश्वर द्वारा दिया गया नियम था (रोमियों 13:1-7; गलातियों 3:19)। कुछ लोग परमेश्वर की व्यवस्था की उपेक्षा करते थे (व्यवस्थाविवरण 12:8; न्यायियों 2:10, 11; 21:25) जबकि दूसरे इसे मानने में टाल-मटोल करते थे (सभोपदेशक 8:11)। कई लोग ऐसे भी थे जो व्यवस्था को गलत ढंग से लागू करने का प्रयास करते (प्रेरितों 2:22-24) या इसे ज़बरदस्ती थोपते थे।

सामान्यतया ''व्यवस्था'' धर्मी लोगों के लिए नहीं बनाई गई थी। पौलुस ने ''खरी शिक्षा''[16] को नकारकर इसे तोड़ने वालों की एक सूची दी:

| | | |
|---|---|---|
| अधर्मियों[17] | अशुद्धों[21] | मनुष्य के बेचने वालों[24] |
| निरंकुशों[18] | मां - बाप के घात करने वालों | झूठों[25] |
| भक्तिहीनों[19] | हत्यारों | झूठी शपथ खाने वालों[26] |
| पापियों[20] | व्यभिचारियों[22] | इनको छोड़ खरे उपदेश के सब विरोधियों |
| अपवित्रों | पुरुषगामियों[23] | |

मनुष्य को बुरे मार्गों से रोकने वाली व्यवस्था की स्पष्ट पहचान आयत 11 में उस सुसमाचार के रूप में होती है जिसे परमेश्वर ने महिमा दी है जैसा कि आयत 11 से स्पष्ट होता है।

## पाठ 2: छुटकारा पाया हुआ पापी (1:12-17)

अध्याय 1 की पहली ग्यारह आयतों में सुसमाचार के नौजवान प्रचारक तीमुथियुस से परमेश्वर के वचन के दुरुपयोग और गलत इस्तेमाल पर काबू पाने की ज़ोरदार अपील की गई है ताकि तेजोमय सुसमाचार से वह भलाई हो सके जिसके लिए इसे बनाया गया है। पौलुस ने उसके अपने जो उसके लिए और सामान्यतया पाप से ग्रस्त लोगों के लिए इस सुसमाचार से खुलने वाले मार्ग के आधार पर तीमुथियुस को बड़ी प्रेरणा दी।

यह अहसास करके कि उसे परमेश्वर ने इस सुसमाचार को दूसरे लोगों में फैलाने के लिए सौंपा है, पौलुस को अच्छा लगता होगा।[27] अगले भाग में पौलुस ने इसके लिए आभार व्यज़्त किया है (1:12-17)।

### आभार मानने वाला सेवक (आयत 12)

पौलुस ने यह कहकर कि ''मैं प्रभु मसीह यीशु का धन्यवाद करता हूं'' उससे मिलने वाले व्यज़्तिगत लाभ[28] के कारण उसकी ओर ध्यान किया। इस वाज़्य के अर्थ और उस

आदमी पर जिसने आभार व्यज़्त करने वाला यह वाज़्य लिखा, विचार करें। यह यूं ही ''धन्यवाद'' कहने से कहीं अधिक था। ये शज़्द उस व्यज़्ति के थे जिसका शरीर ''मसीह में'' होने के कारण घायल और दागों से भरा था (2 कुरिन्थियों 4:11; 11:23-31)। पौलुस का जीवन इस बात का गवाह था कि ''ज़्लेश की बड़ी परीक्षा में'' परमेश्वर का अनुग्रह कैसे ''बड़े आनन्द'' का कारण बन सकता है (2 कुरिन्थियों 8:1-3, 7; देखें प्रेरितों 16:22-34)। इसमें न तो कोई कपट है और न ही पागलपन। यह बड़े शानदार ढंग से हमें याद कराता है कि हम पर आने वाली परीक्षाओं का मसीह में हमारे बढ़ने की तुलना में कहीं कम महत्व है। पतरस और अन्य प्रेरितों के साथ अय्यूब और पौलुस (प्रेरितों 5:41; 4:19-21) अनुग्रह से बढ़ने के शानदार उदाहरण हैं (2 पतरस 3:18)। उनसे यह पता चलता है कि दुख या ज़्लेश में भी धन्यवाद किया जा सकता है, जब वह ज़्लेश किसी अच्छे काम के लिए हो (याकूब 1:2-4; फिलिप्पियों 3:7-11)।[29]

आयत 12 में पौलुस लिखता है, ''मैं, अपने प्रभु यीशु मसीह का, जिसने मुझे सामर्थ दी है, धन्यवाद करता हूं; कि उसने मुझे विश्वासयोग्य समझकर अपनी सेवा के लिए ठहराया।'' परमेश्वर का धन्यवाद करना सही था ज़्योंकि प्रभु ने पौलुस को महान सेवा के लिए ठहराया, उसे सेवा करने के योग्य बनाया और सेवा में उसे विश्वासयोग्य जाना। कोई भी सुसमाचार प्रचारक जो यह धन्यवाद करना सीख लेता है किसी मुश्किल के आने पर पीछे नहीं हटेगा या मण्डली में मिलने वाले किसी काम की जिज़्मेदारी से इन्कार नहीं करेगा। वह सज़्भाल करने, सहनशीलता, सुधारने, छुड़ाने और वापस लाने की अनुग्रहकारी कलाओं को सीख लेगा (देखें याकूब 5:19, 20; गलातियों 6:1, 2; इफिसियों 5:15-18; 2 तीमुथियुस 4:2-5)।

सुसमाचार के प्रति कर्ज़व्य को निभाते हुए अपना जीवन धन्यवाद से बिताने के बाद, पौलुस ने 1:12-16 में स्पष्ट रूप से बताया कि वह शुक्रगुज़ार या कृतज्ञ ज़्यों था। तीमुथियुस व अन्य सभी सुसमाचार प्रचारकों से वह अपने ईश्वरीय कर्ज़व्य के प्रति ऐसे ही निष्ठावान होने की इच्छा कर रहा था।

पौलुस कष्ट सहकर भी धन्यवाद कर सकता था ज़्योंकि प्रभु उसे दृढ़ करता था। हमें भी दृढ़ता[30] के लिए परमेश्वर पर ही निर्भर रहना चाहिए। उससे अलग होकर, हम कुछ भी नहीं कर सकते हैं (यूहन्ना 15:5), लेकिन उसके द्वारा हम वह सब कुछ कर सकते हैं जो वह चाहता है कि हम करें (फिलिप्पियों 4:13; 2 कुरिन्थियों 9:8-10)।

परमेश्वर द्वारा हमें विश्वासयोग्य मानकर[31] कोई काम सौंपना सचमुच बहुत बड़ी बात है। यह पता होना कितना अद्भुत प्रोत्साहन है कि हमें अपने सृष्टिकर्ज़ा की ओर से भरोसा दिया गया है! इस सुन्दर विचार में वह सज़्मान है जो भाइयों को कलीसिया के प्राचीनों के प्रति रखना चाहिए। यह ध्यान करते हुए कि प्रभु ने कैसे उसे अपनी ''सेवा'' में ऊपर उठाया है पौलुस इससे भी अच्छा विचार होगा।[32]

ज़्योंकि प्रभु पौलुस को ऐसा सज़्मान देता था, इसलिए संसार का सबसे बड़ा नियोज़्ता होने के कारण हम उससे पौलुस को अपनी सेवा[33] में ''नियुज़्त''[34] करने की उज़्मीद कर सकते हैं। सुसमाचार प्रचारकों को उस अनादि के साथ मिलकर काम करने के लिए बुलाया जाता है।

## एक पूर्व विद्रोही (आयत 13)

पौलुस का आतंक कुछ देर तक तिहरा था। वह परमेश्वर का निन्दक, सताने वाला और जबरदस्त आक्रमणकारी था।[35]

अज्ञानता (शाऊल मसीह को नहीं जानता था) और अविश्वास (यहूदी परम्परा उसकी सोच पर पूरी तरह से हावी थी) के कारण पौलुस उस सच्चाई को देखने व मानने से दूर रहा जो उसने बाद में सुनी थी (देखें 1 कुरिन्थियों 2:7, 8; मत्ती 13:14, 15; मरकुस 7:6-13)। इसी कारण पौलुस प्रभु की *दया* पर ही निर्भर हो गया। पौलुस के उन तीन दिनों के बारे में विचार करें जब उसने न कुछ खाया और न पीया था (प्रेरितों 9:1-9)। यदि परमेश्वर गलती के ऐसे चक्रवात में जिसमें पौलुस इस समय फंसा हुआ था उसकी क्षमता को देखता, तो निश्चय ही हमें कोई ऐसा आदमी नहीं मिलेगा जो यह कहे, ''परमेश्वर को मेरी आवश्यकता नहीं होगी।'' आइए इस बात से दिलेर हों कि परमेश्वर हमसे प्रेम करता है, और वह उन सबसे प्रेम करेगा जिनके पास पहुंचकर हम उन्हें सिखाना चाहते हैं!

## परमेश्वर के अनुग्रह का सजीव चित्रण (आयतें 14-16)

उद्धारकर्ता के पुनरुत्थान और दर्शन के द्वारा पौलुस को परमेश्वर का *अनुग्रह* दिखाया गया था (प्रेरितों 22:1-10)। यीशु का दर्शन होने से पौलुस का पक्का यकीन हो गया (रोमियों 1:1-5)। परमेश्वर की दया ने पौलुस में प्रेम के स्वभाव और आनन्दपूर्वक आज्ञा को मानने की प्रेरणा दी (यूहन्ना 14:15; प्रेरितों 9:17-20; 22:10-16; इब्रानियों 5:8, 9)।

इस सुन्दर योजना में हम सबसे बड़े पापी के उद्धार के लिए छुटकारे की *सामर्थ* देख सकते हैं। हम पौलुस द्वारा मसीही लोगों को कई महीने तक सताए जाने से छुड़ाने वाले के *धीरज,* या ''सहनशीलता''[36] को देख सकते हैं। ज़रा सोचें कि मसीह ने पौलुस द्वारा प्रभु के लोगों को इतना खींच - खींच कर लाने के बावजूद उसे एक अवसर देकर अपना उदार मन दिखा दिया था! विलियम बार्कले ने इस गुण के दो पहलुओं की ओर ध्यान दिलाया: (1) ''दृढ़ आत्मा है जो कभी हार नहीं मानेगा'' जिसने मसीह को पौलुस को छोड़ने से दूर रखा और आपको और मुझे छोड़ने से उसे दूर रखेगा। (2) यह ''किसी का अपने साथी लोगों के प्रति व्यवहार'' है।[37] यह यूनानी गुण के बिल्कुल विपरीत है जिसे अरस्तु ने किसी अपमान या घाव को सहन करने से इन्कार करने के रूप में परिभाषित किया है। यूनानियों की नज़र में, बड़ा आदमी वही होता था जो अपना बदला ले ले। मसीहियों की नज़र में, बड़ा आदमी वही है जो बदला लेने की सामर्थ होने के बावजूद ऐसा करने से इन्कार करता है। इसमें हमें परमेश्वर का *उद्देश्य* भी दिखाई देता है: उसने उन सब विश्वास करने वाले और आज्ञा मानने वालों के लिए यह जानते हुए कि उसकी दया हमें अनन्त जीवन की ओर ले जाएगी, पौलुस के मन परिवर्तन का उदाहरण दिया।

## परमेश्वर को एक भेंट (1 तीमुथियुस 1:17)

परमेश्वर का अनुग्रह व दया पौलुस को स्मारक दिलाते थे कि हमारा बनाने वाला अद्‌भुत है। उसके परिचय पत्रों पर ध्यान दें:

| परमेश्वर है: | | | | जो मांग करती है: |
|---|---|---|---|---|
| अनादि राजा | – | न खत्म होने वाली सामर्थ | – | अधीनता की |
| अनश्वर | – | न खत्म होने वाली शुद्धता | – | अनुसरण करने की |
| अदृश्य | – | दिखाई न देने वाली सुरक्षा (यूह. 1:18; 2 कुरि. 5:7; भ.स. 19:7-11) | – | विश्वास की |
| एक ही परमेश्वर | – | विलक्षण ईश्वरीयता (निर्ग. 20:1-5; यशा. 44:6; होशे 13:4) | – | सर्वश्रेष्ठता की |

**परमेश्वर का स्वभाव हमसे उसे सदा - सदा के लिए आदर और महिमा देने की पुकार करता है।**

## पाठ 3: निर्णय लेने की मांग (1:18-20)

### ''अच्छी लड़ाई लड़'' (आयतें 18, 19क)

सबसे बड़े पापी तक को छुड़ाने के लिए परमेश्वर का अनुग्रह यह गारंटी नहीं देता कि उसके वचन से हर व्यक्ति के जीवन में अगुआई मिलेगी। यह जीवन के संघर्षों में सज़्मानपूर्वक और बहादुरी से डटे रहने के लिए परमेश्वर के नियमों के प्रति (''भविष्यवाणियों''; 1:18; 2 पतरस 1:20, 21) व्यक्तिगत वचनबद्धता की मांग करता है। इसलिए, पौलुस ने तीमुथियुस को ''अच्छी लड़ाई लड़ने'' का आदेश दिया (देखें 2 कुरिन्थियों 10:3-6; इफिसियों 6:10-19)। इस लक्ष्य को प्राप्त करने का साधन दोहरा है अर्थात ''अच्छा विवेक''[38] और ''कपट रहित विश्वास'' (1:5)।

परमेश्वर के वचन, या ''भविष्यवाणी'' से विश्वास उत्पन्न होता है (रोमियों 10:17)। उस विश्वास में बने रहने से अच्छा विवेक बनता है। हमें विश्वास द्वारा धर्मी ठहराया जाता है (रोमियों 5:1, 2; गलातियों 3:26, 27), हम विश्वास से चलते हैं (2 कुरिन्थियों 5:7), विश्वास से संसार पर विजय पाते हैं (1 यूहन्ना 5:4), और विश्वास में हम मसीह के स्वभाव को अपनाते हैं (गलातियों 2:20)। हमारे विश्वास को धार्मिकता माना जाता है (रोमियों

4:3-5) जो विश्वास की ढाल से शैतान के सभी जलते हुए तीरों को बुझा सकता है (इफिसियों 6:16)। आश्चर्य नहीं कि पौलुस चाहता था तीमुथियुस विश्वास में बना रहे! सुसमाचार के हर प्रचारक को अपने जीवन और सेवकाई को विश्वास की उस रंगभूमि में चलाना चाहिए जो वचन पर बनी हो!

ऐसे सुसमाचार प्रचारक पर हाय जो इन तीन बातों में से एक को भी जो पौलुस ने तीमुथियुस को अपने आदेश में शामिल की थीं, निकालने की कोशिश करता है। यदि वह आज्ञा को *वचन* के बिना पूरा करने की कोशिश करता है, तो शीघ्र ही उसके पांव गलत दिशा में मुड़ जाएंगे (यिर्मयाह 10:23)। यदि वह इसे *विश्वास* के बिना पूरा करने की कोशिश करता है, तो उसे कुछ नहीं मिलेगा (मत्ती 25:24-30; मरकुस 9:17-23)। यदि वह इसे *शुद्ध विवेक* के बिना पूरा करने की कोशिश करता है तो आत्मविश्वास की कमी के कारण उसके पांव व टांगें लड़खड़ाने लगेंगी (देखें 1 शमूएल 17:21-25; 28:5-7, 15, 20, 21; लूका 5:3-11 भी देखिए)। पौलुस के आदेश से किसी भी प्रकार से भटकने वाले का हाल हुमिनयुस और सिकन्दर जैसा बुरा होगा, जिन्हें पौलुस ने ''शैतान को सौंप दिया, कि वे निंदा करना न सीखें'' (1:20)।

## शैतान का दोष न निकालें (आयतें 19ख, 20)

हुमिनयुस और सिकन्दर ने उन उपदेशों, विश्वास, और अच्छे विवेक को जिस पर पौलुस ने ज़ोर दिया था अपने से दूर कर लिया था।[39] पौलुस के शब्दों में कितने ज़ोरदार ढंग से यह ऐलान है कि इन दो लोगों के पास विश्वासी रहने का बहुत अच्छा अवसर था! उन्होंने प्रेमपूर्वक प्रस्तुत किए गए उस ईश्वरीय और मानवीय प्रभाव को छोड़ दिया था।

यह तथ्य कि ''उनका विश्वासरूपी जहाज डूब गया'' था न केवल यह ऐलान करता है कि उनका अपना नाश हुआ, बल्कि उस शिक्षा के विरुद्ध भी पुकार - पुकारकर कहता है जिसके अनुसार ''एक बार विश्वास में आने का अर्थ हमेशा विश्वासी रहना'' या ''एक बार उद्धार पाने का अर्थ हमेशा के लिए उद्धार'' है (देखिए 1 तीमुथियुस 4:1; गलातियों 5:4)।

यह तथ्य कि पौलुस ने इन लोगों को ''शैतान को'' सौंप दिया था (देखिए मत्ती 18:15-18; तीतुस 3:10, 11; 2 थिस्सलुनीकियों 3:6, 14, 15; 1 कुरिन्थियों 5:1-5) यूहन्ना 8:44 में मसीह द्वारा दिए उदाहरण से मेल खाता है। उसने कहा है:

> तुम अपने पिता शैतान से हो, और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से हत्यारा है, और सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उस में है ही नहीं: जब वह झूठ बोलता, तो अपने स्वभाव ही से बोलता है; क्योंकि वह झूठा है, बरन झूठ का पिता है।

जैसे द *सैटनिक बाइबल* के लेखक एंटन एस. लावे ने लिखा है, ''... यदि आप शैतान का खेल खेलने जा रहे हैं, तो शैतान का नाम क्यों नहीं लेते।''[40]

कृपया पौलुस के उद्देश्य पर ध्यान दें कि उन्हें शैतान को सौंपने के बावजूद पौलुस का

उद्देश्य यह था कि वे ''निंदा करना न *सीखें*'' (1:20)। निंदा करना एक गंभीर अपराध है,[41] परन्तु पौलुस अभी भी चाहता था कि इन दोनों को सिखाया जाए। पौलुस द्वारा क्रिया का चयन[42] यह सिद्ध करता है कि उसे इस बात का निश्चय नहीं था कि वे उसकी शिक्षा को ग्रहण करेंगे या नहीं। इसका श्रेय पौलुस को ही जाता है कि उसने उनकी निंदा के बावजूद उन्हें सिखाने की इच्छा की थी!

इस प्रकार अध्याय 1 इस चेतावनी के साथ समाप्त होता है कि हमें ज़्या नहीं करना चाहिए। हमें ज़्या करना चाहिए और ज़्या बनना चाहिए उस पर अध्याय 2 में ध्यान दिया गया है।

---

पाद टिप्पणियां

[1]नये नियम में प्रेरितों के तीन वर्ग मिलते हैं: (1) परमेश्वर का प्रेरित, यीशु मसीह (इब्रानियों 3:1); (2) मसीह के प्रेरित (मत्ती 10:2-4; प्रेरितों 1:26; गलातियों 2:8; 1 कुरिन्थियों 15:7-10); (3) कलीसिया के प्रेरित, जैसे 2 कुरिन्थियों 8:23; प्रेरितों 14:14 में। इस अंतिम मामले में, पुरुषों को किसी प्रकार उस सेवा या अवसर के लिए कलीसिया के दूत या apostoloi बनाकर किसी रूप में कलीसिया का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना जाता था। इसे पद के बजाय जिम्मेदारी का एक काम मानना चाहिए। प्रेरित के लिए (''apostle'') के लिए यूनानी शब्द *apostolos* का अर्थ ''एक प्रतिनिधि, दूत, आदेश देकर भेजा गया'' है (सी. जी. विल्के और विलिबल्ड ग्रिम्ज़, *ए ग्रीक - इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* अनु. व संशो. जोसेफ एच. थेयर [एडिनबर्ग, स्कॉटलैंड: टी. एण्ड टी. क्लार्क, 1901; रीप्रिंट सं. ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: बेकर बुक हाउस, 1977], 68)। प्रत्येक मामले में इस सेवा को पूरा करने वाला व्यक्ति भेजने वाले के अधिकार से बात करता है (देखें लूका 10:16; यूहन्ना 13:20)। [2]2 पतरस 3:18 और 2 कुरिन्थियों 8:1-3, 7 पर ध्यान दें जहां हमें मिलता है कि कलीसिया में मिले अनुग्रह से हमें दुख में भी आनन्द से भरपूर होने में सहायता मिलती है। बहुत कंगाल व्यक्ति भी अपनी स्वतन्त्रता के धन को दिखा सकता है। परमेश्वर का अनुग्रह हमें विश्वास, बातचीत, ज्ञान, पूरी गंभीरता और प्रेम में बढ़ने में सहायता करता है। एक सुसमाचार प्रचारक को अपने काम में इन गुणों से कितना लाभ हो सकता है! (पाद टिप्पणियों में थेयर द्वारा दी *charis* की परिभाषा देखें)। [3]इस अनुग्रह (यू.: *eleos*) का अर्थ ''दयनीय और दुखी लोगों के साथ उन्हें छुड़ाने की इच्छा से करुणा या भलाई करना'' है (थेयर, 203)। सांसारिक लोगों के साथ मिलने पर यह गुण कितना बहुमूल्य हो जाता है। [4]इस शांति के लिए यूनानी शब्द *eirene* का अर्थ है ''मसीह के द्वारा अपने उद्धार का आश्वासन पाए हुए आत्मा की शांत स्थिति, और इस प्रकार परमेश्वर से किसी प्रकार का भय नहीं होता और अपनी सांसारिक स्थिति से संतुष्टि होती है चाहे वह कैसी भी हो: रोमियों 8:6'' (थेयर, 182)। [5]''आज्ञा'' के लिए यूनानी शब्द, *parangelia* का अर्थ है ''... एक से दूसरे व्यक्ति तक संदेश पहुंचाना ... घोषणा करना, ऐलान करना ... आज्ञा, आदेश या निर्देश देना'' (थेयर, 479)। प्रासंगिकता के स्तर पर इस शब्द के अर्थ की गहराई पर ध्यान दें: धन्य है वह सुसमाचार प्रचारक जिसे केवल परमेश्वर का संदेश ''सुनाने'' की आवश्यकता है - और इससे किसी भी और प्रकार की शिक्षा या प्रचार नहीं होगा। परन्तु, यदि आवश्यक हो, तो सुसमाचार प्रचारक को चाहिए कि वह झूठे शिक्षक को शिक्षा देने से मना करने के लिए आज्ञा, आदेश या निर्देश दे। आखिर अलग प्रकार की शिक्षा देते रहने से एक मनुष्य की आत्मा दांव पर लग जाती है (गलतियों 1:6-9)। [6]कथा कहानी (यू.: *muthos*) - ''कल्पना, असत्य'' (थेयर, 419)। [7]विवाद (यू.: *ekzetesis*) - ''जांच ... सूक्ष्म जांच ...'' छानबीन (थेयर, 195)। [8]काल (यू.: *oikonomos*)- (''प्रबन्धन'') (थेयर, 440-41)। [9]विश्वास में (यू.: *en pistei*) - परमेश्वर की व्यवस्था या प्रबन्ध के स्रोत के रूप में यहां पर विश्वास मूर्त रूप में सशक्तदान कारक है (एच.

ई. डैना एण्ड जे. आर. मैंटे, *ए मैनुअल ग्रामर ऑफ द ग्रीक न्यू टैस्टामेंट* [न्यू यार्क: मैकमिलन कं., 1948], 84)। [10]भटकना (यू.: *astocheo*) - ''निशाने से चूकना ... गलती करना'' (एडवर्ड रोबिन्सन, *ए ग्रीक इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ द न्यू टैस्टामेंट* [न्यू यार्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, 1863], 103)।

[11]बकवाद (यू.: *mataiologia*) - ''व्यर्थ झगड़ा'' (रोबिन्सन, 446)। टाइटस ने *mataiologos* रूप का इस्तेमाल किया। [12]रोबिन्सन, 446. [13]थेयर, 392. [14]दृढ़ता से बोलना (यू.: *diabebaioomai*) - ''...स्थिर होना; इसलिए दृढ़ता से दावा करना'' (रोबिन्सन, 168)। [15]विलियम बार्कले, *द लैटर टू तिमोथी, टाइटस एण्ड फिलेमोन,* द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़, संशो. संस्क. (फिलाडेल्फिया: वैस्टमिन्स्टर प्रेस, 1960), 36-37. [16]खरी (यू.: *hugaino*)- ''... स्वस्थ, अच्छी, ... दृढ़, शुद्ध, मसीही शिक्षा और जीवन के सज़्बन्ध में सही ... विशुद्ध'' (रोबिन्सन, 736)। [17]अधर्मी (यू.: *anomos*) - ''अन्यजातियों के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला, 1 कुरिन्थियों 9:21, चाहे उसमें 'दुष्टता' हो या न'' (थेयर, 48)। [18]निरंकुश; आज्ञा न मानने वाले (यू.: *anupotaktos*)- ''नियन्त्रण में न रहने वाले ... बे - लगाम, विद्रोही'' (थेयर, 52)। [19]भज़्तिहीन (यू.: *asebes*)- ''परमेश्वर के प्रति पवित्रताई के भय से वंचित ... नास्तिक'' (थेयर, 79)। [20]पापी (यू.: *amartolos*)- ''... पाप में लगा ... पाप में डूबा हुआ, विशेषतया दुष्ट'' (थेयर, 31)।

[21]अपवित्र, विधर्मी (यू.: *anosios*)- ''... दुष्ट ... अपवित्र असंगति ... भयंकर और दुष्ट उत्पीड़न'' (वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक - इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट एण्ड अदर अरली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 2रा संस्क., संशो. संस्क. विलियम एफ़. अर्ंट एण्ड एफ़. विल्बर गिंगरिक [शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस, 1957], 71-72)। [22]व्यभिचारी (यू.: *pornos*)- ''अपना शरीर दूसरे की वासना मिटाने के लिए भाड़े पर देने वाला पुरुष, पुरुष वेश्या ... अप्राकृतिक या अवैध शारीरिक सज़्बन्ध बनाने वाला पुरुष, व्यभिचारी'' (थेयर, 532)। [23]पुरुषगामी (यू.: *arsenokotes*)- ''*arsen*= पुरुष; *koite*= बिस्तर; जो पुरुष के साथ ऐसे लेटता है जैसे स्त्री के साथ, लौंडेबाज'' (थेयर, 75)। [24]मनुष्य का बेचने वाला (यू.: *andrapodistes*)-''गुलामों को खरीदने - बेचने वाला, अपहरणकर्ज़ा ... जो स्वतन्त्र लोगों को अन्यायपूर्ण ढंग से दास बना लेता है ... जो दूसरों के दासों को चुराकर उन्हें बेचता है'' (थेयर, 43)। [25]झूठा (यू.: *pseustes*)- ''... झूठा, झूठ बोलने वाला, धोखा देने वाला, ... झूठी शिक्षा देने वाला, धोखेबाज ... जो परमेश्वर के प्रति निष्ठाहीन है, विश्वास से फिरने वाला, दुष्ट व्यज़्ति, रोमियों 3:4'' (रोबिन्सन, 792)। [26]झूठी शपथ खाने वाला (यू.: *epiorkos*)-''झूठी शपथों के सज़्बन्ध में ... झूठी कसम खाने वाला, झूठा शपथकर्ज़ा'' (जी. ऐज़्बट - स्मिथ, *ए मैनुअल ग्रीक लैक्सिकन ऑफ द न्यू टैस्टामेंट* [ऐडिनबर्ग, स्कॉटलैण्ड: टी. एण्ड टी. ज़्लार्क, 1948], 172)। [27]एक अच्छी, तकनीकी बात है कि इस भरोसे के लिए यूनानी शज़्द कर्मवाच्य (*epistuthen*) है, जो इस बात पर ज़ोर देता है कि यह पौलुस पर किया गया था; उसने इसे कमाया या इसका अधिकार नहीं पाया। परमेश्वर के अनुग्रह से पौलुस को यह अच्छी सेवा मिली। [28]लाभ (यू.: *charis*) - ''जो करुणामय दया का हर्ष, आनन्द, सुख, सुखद अहसास देता है जिससे परमेश्वर लोगों पर अपना पवित्र प्रभाव देते हुए उन्हें मसीह में बदलता, स्थिर रखता, दृढ़ करता, उन्हें मसीही विश्वास, ज्ञान प्रेम में बढ़ाता और उनमें मसीही गुणों का अज़्यास करने की लौ जगाता है'' (थेयर, 666) [29]ज़्या सही है, सताने वाला होना या सताया जाने वाला? ज़्या बुराई करने वाले बनकर विजयी होना अच्छा लगता है या भलाई करने के लिए कष्ट सहना ताकि बुराई न हो? (देखिए 1 पतरस 3:15-18; 2:20-24; रोमियों 12:20, 21)। [30]दृढ़ता (यू.: *endunamoo*) - ''मजबूत बनाना'' (थेयर, 214)।

[31]विश्वासी मानना (यू.: *hegeomai*)- ''... अगुआई करने वाला होना, शासन करना, आज्ञा देना, ऊपर अधिकार रखना, ... प्रभाव का सज़्मान करना, सलाह देकर नियन्त्रित करना, किसी को बहुत अधिक सज़्मान देना, 1 थिस्सलुनीकियों 5:13'' (थेयर, 276)। [32]यह शज़्द प्रभु के नियन्त्रण तथा भरोसे (गलातियों 1:15-24) और पौलुस के समर्पण को दिखाता है (प्रेरितों 22:10)। इन तथ्यों के कारण सुसमाचार प्रचारक विनम्र होने के साथ-साथ दृढ़ और आत्मविश्वास से पूर्ण रहेगा (2 कुरिन्थियों 3:12; 2 तीमुथियुस 4:17, 18)। काश परमेश्वर हमें सुसमाचार के ऐसे और प्रचारक दे जो अहसास के साथ-साथ कि ''... इन सब बातों में हम

उसके द्वारा जिसने हमसे प्रेम किया है, जयवंत से भी बढ़कर हैं'' (रोमियों 8:35-39) यह समझ रखते हों कि ''मैं कर्जदार हूं'' (रोमियों 1:14)।[33]पौलुस के शज़्द प्रयोग में यहां पर तीन व्यापक तथ्यों पर ज़ोर दिया गया है: (1) यह कि हमारे लिए प्रभु ने मन में एक उद्देश्य रखा है (देखिए यिर्मयाह 1:5; इफिसियों 1:3-7; गलातियों 1:15-24); (2) यह कि परमेश्वर हमें अपनी सेवा में रखता (या हम पर कार्य करता) है; (3) यह कि उसकी इच्छा पूरी करने की अनुमति देकर उसके पूर्वप्रबंध में सेवा करते हुए धन्यवादी होकर उसमें भरोसा रखना चाहिए (मज़ी 26:38-44; 1 कुरिन्थियों 12:18; 2 कुरिन्थियों 2:14-17; फिलिप्पियों 2:12, 13; इफिसियों 1:22, 23)।[34]नियुज़्त (यू.: *themenas*) - ''उद्देश्य को पूरा करने के लिए ... योजना बनाना, रखना, तैयार करना'' (थेयर, 622-23)। यहां पर मध्य स्वर कृदंत जोर देता है कि परमेश्वर हमारे जीवन में कैसे काम करता है (देखिए पाद टिप्पणी 33)।[35]आक्रमणकारी (यू.: *hubristes*) - ''अवज्ञाकारी, गुस्ताख, हानिकारक'' (रोबिन्सन, 736); ''घमण्ड से तना हुआ, जो दूसरों पर या तो अपमानजनक भाषा का या कोई लज्जाजनक गलत कार्य करता है'' (थेयर 633-34)। पौलुस को सर्वोज़म आत्मा मिला था, जो उसकी मानने वालों से पीड़ादायक समर्पण की मांग करता था।[36]यह शज़्द ''सहनशीलता'' (यू.: *makrothumia*) - ''धीरज, सहिष्णुता, एकनिष्ठा, स्थिरता, दृढ़ प्रयत्न, ... जो कठिनाइयों और मुश्किलों को सहने में देखी जाती है ... बुराई का बदला लेने में धीमापन ...''; संज्ञा रूप *makrothumeo* पर ध्यान दें, ''हिज़्मत वाला होना, धैर्य न छोड़ना ... दूसरों के अपमानों और चोटों को सहने में धीरज करना; बदला लेने में नम्र और धीमे होना ... क्रोध में धीमा, दण्ड देने में धीमा होना'' [थेयर, 387]) पापियों के लिए मन को कितना छू लेने वाला है![37]विलियम बार्कले, न्यू टैस्टामेंट वड्र्स (लंदन: SCM प्रैस, 1964), 196-97. नोट रोमियों 12:19-21 देखिए।[38]अच्छा विवेक (यू.: *suneidesis*) - ''पापों के प्रति सचेत मन ... नैतिक रूप से भले और बुरे में अंतर को पहचानने वाला मन, जो भलाई करने के लिए उतावला परन्तु बुराई करने से दूर रहता है, इनमें से एक की तो सिफारिश, परन्तु दूसरी की निंदा करता है'' (थेयर, 602-3)।